e content

Story Board

Prof. Mukul Srivastava
Head
Department of Journalism & Mass Communication
University of Lucknow,
Lucknow (India)

sri.mukul@gmail.com
https://www.youtube.com/channel/UCdkxo7fhISE8kzyKolTL8IQ
http://mukulmedia.blogspot.com/
www.mukulmedia.com
http://www.lkouniv.ac.in/

हरी झंडी – लाल झंडी

यह फिल्म रेलवे गार्ड की भावनाओं को प्रदर्शित करती है , यह हमें रेलवे गार्ड के कर्तव्यों के एक दिन से परिचित कराती है। इस फिल्म में उसकी लगन, निष्ठा के साथ एक रेलवे का आदमी कहलाने के अनुभूति को दर्शाती है साथ ही उसका अन्य रेलवे कर्मचारियों के प्रति सम्मान यह दिखाता है कि रेलवे का प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है जिसके चलते रेलवे का नेटवर्क दुनियाँ में सबसे बड़ा बन पाया। इस कहानी में रेलवे गार्ड की पारिवारिक भावनाओं को भी दिखाया गया है जिससे वह अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति भी चिंतित है और वह चाहता है कि उसके बच्चे पढ़–लिख कर रेलवे में ही नौकरी करें क्योंकि वह इस परम्परा को आगे भी पल्लवित होता देखना चाहता है। वह मानता है कि रेलवे मैन कहलाना ही जीवन की राह है।

इस फिल्म का प्रारम्भ रेलवे गार्ड के घर से होता है जहाँ वह अपनी ड्यूटी के लिये तैयार हो रहा है। उस आदमी की पत्नी, सेवा निवृत रेलवे अधिकारी वृद्ध पिता, एक पुत्र व पुत्री को भी दर्शाया गया है। बेटा रेलवे के ओक ग्रोव स्कूल व बेटी घर के पास ही के रेलवे स्कूल में पढ़ती है। परिवार में एक शादी का समारोह है किन्तु गार्ड छुट्टी लेने के लिए तैयार नहीं हैं।

इस फिल्म के द्वारा हम उसकी पिछली व आज की जिंदगी को प्रदर्शित कर रहे हैं। इस फिल्म के माध्यम से हम यह भी दर्शा रहे हैं कि उसका कार्य रेलवे की समबद्धता व सुरक्षा से कितना जुड़ा है। कुछ छोटी–छोटी घटनाओं से हमने यह भी प्रयास किया है कि वह कितना सकारात्मक सोच का व्यक्ति है जो यह चाहता है कि हर रेल यात्री रेलवे के प्रति सही नज़रिया रखे।

sri.mukul@gmail.com, http://mukulmedia.blogspot.com/

इस फिल्म के अन्त में वह जैसे ही घर आता है, अगली ड्यूटी के लिये तैयार होने लगता है अन्त में दृश्य में वह अपने सेवा निवृत वृद्ध पिता के साथ चाय पीते हुए यह संदेश देता है कि रेलवे कर्मचारी की जीवन यात्रा कभी समाप्त नहीं होती यहाँ तक कि सेवा निवृति के उपरान्त भी।

Scenes	दृश्य	ध्वनि
दृश्य 1	तड़के सुबह के साथ फिल्मांकन प्रारम्भ होता है। कैमरे मे रेलवे गार्ड को तैयार होते दिखया जा रहा है।	दृश्य : सुबह का दृश्य है धीमी आवाज में रेडियो बज रहा है आदमी की आवाज : सुबह – प्रकृति का नई शुरुआत का प्रतीक एक नया दिन, एक नई यात्रा, यात्रा के बाद फिर यात्रा।
दृश्य 2	उसकी पत्नी उसके लिए सुबह का नाश्ता लाती है और उनके बीच एक शादी में सम्मलित होने के लिए बातचीत हो रही है।	मैं बलराम खन्ना, उत्तर रेलवे का गार्ड और यह मेरी रेलवे कालोनी का मकान। मेरी पत्नी छुट्टी लेने को आग्रह कर रही है। गर्मियों में बहुत स्पेशल टेन चलती है इसलिए छुट्टी मिलना असम्भव हो जाता है।
दृश्य 3	यह दृश्य भीड़ भरे रेलवे स्टेशन का है जहॉ हमारा गार्ड ट्रेन के बाहर खड़ा है। वॉकी टॉकी पर बात कर रहा है।	गार्ड ड्राइवर को गाड़ी की सही पोजीशन की जानकारी दे रहा है। जहां गाडी में पार्सल चढ़ाने है।
दृश्य 4	गार्ड पार्सल बोगी में सभी पार्सलों के रखें जाने का निरिक्षण और सभी संयत्रों को चेक करता है और उसके हाथ में एक वॉकी–टॉकी है जिसपर वह बातें कर रहा है।	मै लोड़िग करने के बाद तैयार होने की सूचना दे रहा हूँ।
दृश्य 5	एक व्यक्ति गार्ड से टिकट बनाने का आग्रह करता है। वह भीषण भीड़ में टिकट नहीं ले पाया है। फिर वह अपने रजिस्टर व काग़ज़ों को देखता है। वह पार्सल पर लगे काग़ज़ों को भी देखता है। एक बार उनका निरीक्षण करने के उपरान्त वह ट्रेन के बाहर की ओर झांकता है, उसे इंजन की सीटी सुनाई देती है, गार्ड अपनी घड़ी देखता है।	गार्ड अपने पिता समान उस वृद्ध व्यक्ति को एक सर्टिफिकेट बना कर देते है वो अगर ट्रेन में टी टी को दिखायेगा तो बिना जुर्माने के उसका टिकट बना दिया जायेगा।
दृश्य 6	रेलवे इंजन की सीटी सुनने के बाद अपनी सीटी बजाता है व ट्रेन चलने के लिए हरी झंडी दिखाता है और भीड़ की तरफ देखता है। गार्ड झंडी हिलाता है और ट्रेन चल देती है। और फिर वह कागजों में व्यस्त हो जाता है।	यह दृश्य मुझे सदैव अच्छा लगता है। लोगों का अपने प्रियजनों से विदाई व दूसरे प्रियजनों से अगले मंजिल पर मिलन। लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना उसके जीवन में मुस्कान बिखेरने में हमारा पूरा योगदान रहता है
दृश्य 7	वह अपने नाश्ते का डिब्बा खोलकर नाश्ता करने लगता है। नाश्ते के बाद चाय पीता हुआ वह पर्स निकालकर अपने परिवार के फोटो देखता है।	आप जानते हैं कि रेलवे गार्ड का जीवन केवल लाल–हरी झंडी दिखाने के अलावा भी है। रास्ते भर रेल यात्रियों की सुरक्षा व अन्य संपत्ति की सुरक्षा का दायित्व भी है। इंजन की सीटी बजती है।

sri.mukul@gmail.com, http://mukulmedia.blogspot.com/

Scenes	दृश्य	ध्वनि
 दृश्य 8	इसी बीच वह घूमकर केबिन में रखी वस्तुओं को देखता है कि वह सुचारु रूप से रखी हैं अथवा नहीं।	एक गार्ड सदैव सुरक्षा व सावधानी के प्रति सजग रहते हैं। हे ईश्वर माफ करना। हालांकि मेरे केबिन में आकस्मिक ब्रेक हैं किसी समय के लिए परन्तु मैं आशा करता हूं कि मुझे इसका इस्तेमाल न करना पड़े। ये लो पहला स्टेशन आ गया।
 दृश्य 9	ये बोगी का दृश्य जहां एक बच्चा बाहर देख रहा है।	अब हमारे व्यस्त होने का समय है कुछ लोग सोचते हैं कि यह हमारे प्रतिदिन की दिन चर्या है किन्तु विश्वास करिये कि यह हमें रोज़ नये अनुभव देता है।
 दृश्य 10	अब ट्रेन चल चूकी है और गार्ड सोचने लगता है।	ठीक है देखें मेरी पत्नी रजनी ने नाश्ते में क्या दिया है। मेरी पत्नी अच्छी रसोइया है। यह कोई मायने नहीं रखता कि हम कितनी लम्बी यात्रा पर जा रहे हैं। परन्तु मुझे सदैव घर का खाना पसन्द है।
 दृश्य 11	कुछ सामजिक त्योहारों के दृश्यों का फिल्मांकन है।	एक चीज उसकी व सभी रेलवे कालोनी में रहने वाली महिलाओं की जो लम्बे व अव्यवस्थित घंटों के कर्तव्य निर्वहन को बाखूबी समझती हैं। इन कर्तव्यों के निर्वहन के लिए मुझे छोटी–छोटी सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं का बलिदान देना पड़ता है। (धीमा भावात्मक संगीत)
 दृश्य 12	(आदमी की आवाज) लो मेरा स्टेशन आ गये किन्तु मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। मुझे अभी अपनी लम्बी रिपोर्ट के साथ पूरी ट्रेन सौंपनी है।	(इंजन की सीटी की आवाज) लेकिन इन बलिदानों के बदले जो मुझे सम्मान मिलता है वह महत्वपूर्ण है। मैं अपने दोनों बच्चों को रेलवे की नौकरी में देखता चाहता हूं।
 दृश्य 13	अब आरामगृह का दृश्य	वह आरामगृह के कमरे में बिस्तर पर बैठकर अपनी वर्दी उतारता है और अपने कुछ दोस्तों के साथ हंसी में मशगूल हो जाता है और मेरा एक और परिवार, इस परिवार से मुझे एक और यात्रा, मुझे अपने दूसरे परिवार के पास ले जायेगी ..... मेरे घर। मेरे अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों को फिर से निर्वाहन के लिए तैयार होने का समय।
 दृश्य 14	वह अपनी नई ड्यूटी के लिए तैयार है। हम देखते हैं पहले की तरह वह सभी काम करता है।	आदमी की आवाज – देखो लगता है रेलवे क्रॉसिंग है, हमें हर जगह रेल की सुरक्षा के लिए सावधान रहना पड़ता है। मुझे प्रतिदिन हजारों चेहरों पर सुखद – संतृष्टि देखकर बड़ी खुशी होती है।

srimukul@gmail.com, http://mukulmedia.blogspot.com/

Scenes	दृश्य	ध्वनि
दृश्य 15	ट्रेन चल रही है अब हम एक रेलवे स्टेशन का दृश्य दिखाते हैं– जहां ड्राइवर, कुली और सफाई कर्मचारी तैनात है। अंत में हम भारत की अलग–अलग संस्कृति के लोगों को दर्शाते हैं।	रेलवे मैन की यात्रा फिर यात्रा केवल मेरी ही नहीं अपितु साधारण सफाईकर्मी से लेकर इंजीनियर तक की है। हम सभी मिलकर अपने काम को अलग–अलग पूरा कर अपने कर्तव्यों को अंजाम देते हुए देश की सेवा करते हैं। रेलवे के हर आदमी को रेल की सेवा के साथ–साथ देश की सेवा करने का गौरव प्राप्त है।
दृश्य 16	फिल्मांकन के अंत में हम रेलवे इंजन, ड्राइवर जो इंजन को प्लेटफार्म पर ला रहा हैं और फिर हम केबिन के दरवाजे पर खड़े गार्ड को दिखाते हैं।	यह प्रेरणा व गर्व का बहुत महत्वपूर्ण स्थल है। केवल मेरे लिए ही नहीं हर एक रेलवे के आदमी के लिए रेलवे एक रेल परिवार का हिस्सा होकर।
दृश्य 17	गार्ड सोचते–सोचते चाय का आनन्द ले रहा है।	उसके लिए हर दूसरी यात्रा पहली यात्रा से महत्वपूर्ण है। अब समय आ रहा है कि जब मेरा बेटा बड़ा होकर मेरी इन यादों का सहभागी बनेगा।
दृश्य 18	दृश्य डूबते सूरज के साथ समाप्त होता है।	
दृश्य 19	उत्तर रेलवे – लोगो अंत में एक लाइन आती है– ''यात्रा ही गन्तव्य है।''	

sri.mukul@gmail.com, http://mukulmedia.blogspot.com/

Disclaimer : The Visuals shown here have been created by us and situation and charters involved are not real.